REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

उत्तराखण्ड राज्य के निवासियों की पर्यावरण जागरूकता के स्तर का उनकी पर्यावरण अभिवृत्ति पर प्रभाव।

डॉ. डी. एस. गड़िया[1] , वन्दना तिवारी[2]
[1]ऐसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,शिक्षा विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून।
[2]शोध छात्रा, हिमगिरी जी़ यूनिवर्सिटी , देहरादून.

सार

पुस्तुत शोध पत्र उत्तराखण्ड राज्य के निवासियों के पर्यावरण जागरूकता के स्तर का उनकी पर्यावरण अभिवृत्ति पर प्रभाव के अध्ययन पर आधारित है। मानव एवं पर्यावरण के बीच अनन्तकाल से एक अपरिहार्य सम्बन्ध रहा है। मानव की स्वार्थपरक प्रकृति ने उसे प्रकृति की विविधताओं को अनाधिकृत रुप से उपयोग ही नही असीमित दुरुपयोग के लिये भी उत्प्रेरित किया। परिणामस्वरूप पर्यावरण समस्याओं के मूल में कहीं न कहीं मानव की अनियन्त्रित तथा असंतुलित जीवन पद्वति है तो इसका समाधान भी मानव व्यवहार के नियमन परिशोधन एवं संशोधन में उपलब्ध होगा। आज सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण असन्तुलन जैसी समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। पर्यावरण असंतुलन इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा संकट बनकर उभरा है। अतः वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण संकट से उबरने की तीर्व आवश्यकता को अनुभव किया जा रहा है। क्योंकि यदि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो जीवन सुरक्षित रहेगा। अतः पर्यावरण को स्वच्छ–साफ व संतुलित बनाने की आवश्यकता है। पर्यावरण की समस्याओं को देखकर पर्यावरण को संतुलित बनाने के लिये मनुष्य स्वंय अपनी भूमिका का अनुभव करते हुए पर्यावरण की सुरक्षा के लिये उसके प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित कर रहा है। पर्यावरण जागरूकता से अभिप्राय पर्यावरण एवं उससे जुड़ी समस्याओं जैसे प्रदूषण, जनसंख्या, विस्फोट, जंगलों का विनाश,परिस्थिकी व्यवधान, ऊर्जा संकट आदि के प्रभावों के विषय में ज्ञान एवं जुड़े तथ्यों से है

पर्यावरणअभिवृत्ति से अभिप्राय पर्यावरण के प्रति सचेतना, विचारशीलता, मजबूत भावनाएं तथा विचार एवं पर्यावरणीय ह्रास को रोकने हेतु सक्रिय रूप से भागीदारी करने से है।

शब्दकुंजी: पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता, पर्यावरण अभिवृत्ति।

परिचय

पर्यावरण व वातावरण वह शब्द है जो समस्त चारों ओर विद्यमान वाह्य शक्तियों, प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक वर्णन करता है, जो जीवधारी के जीवन, स्वभाव, व्यवहार और अभिवृत्ति प्रौढ़ता, नैतिकता पर प्रभाव डालता है। अतः जो कुछ भी हमारे चारों ओर विद्यमान है और जो हमारी रहन–सहन की दशाओं तथा मानसिक क्षमताओं को प्रभावित करता है वही पर्यावरण कहलाता है।

अतीत की सबसे बड़ी भूल यह है कि मनुष्य ने स्वंय की नैतिकता को खो दिया है, वह सही गलत में पहचान करना भूल गया है। जड़ पदार्थों के ढेर में मानवीय चेतना भी जड़ हो गयी है। बीसवीं सदी में खनिज ऊर्जा पर आधारित औद्योगिक विकास ने हमारे पर्यावरण तथा समाज को इतना प्रदूषित किया है कि मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है और पर्यावरणीय असंतुलन

इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा संकट बनकर उभरा है। प्रकृति और मनुष्य के बीच का सन्तुलन सदियों–सहस्त्राब्दियों पुराना है। ऊर्जा की अन्धा–धुन्ध खपत, वनों की बेशुमार कटाई, अनायास बढ़ती हुई जनसंख्या, तेजी से फैलता प्रदूषण और उसके बीच संसाधनों का निर्ममशोषण–यही बदला चुकाया मनुष्य ने प्रकृति की अनुकम्पा का। फसलों के लालच में वह पृथ्वी के गर्भ को चीरकर रसायनिक खाद भर रहा है। विलासिता के दृष्टिकोण ने मिलों, फैक्ट्रियों, कारखानों और संयत्रों के माध्यम से चारों ओर प्रदूषण फैलाया, तेज रफ्तार की चाह ने मोटरों, ट्रकों और स्कूटरों आदि की ताबड़तोड़ दौड़ भाग ने धुआं ही धुआं भर दिया, उपभोग की संस्कृति ने कोयले, पेट्रोलियम एवं अनेक खनिजों को स्वाहा करने के लिए उसे विवश किया तथा बहादुरी, खान पान और सजावट की लिप्सा ने जीव–जन्तुओं के व्यापक संहार का रास्ता खोल दिया। वनों की लकड़ी काटते–काटते व्यक्ति अपनी किस्मत पर भी कुल्हाड़ी चला रहा है। कारखानों का दूषित जल नदियों और समुद्र में डालकर मानव केवल मछलियों और जल जन्तुओं का ही जीवन समाप्त नहीं कर रहा है, अपितु अपनी जीवन–रेखा को भी छोटा करता जा रहा है। वायुमण्डल को कार्बन–डाइआक्साइड से भरकर हवा की ताजगी को ही नष्ट नहीं कर रहा है, अपितु पूरी मानवता के श्वास की गिनती को भी कम कर रहा है।

मानव व पर्यावरण का अटूट सम्बन्ध है अपने उद्‌भव काल से मानव ने पर्यावरण को अपने विकास में सहयोगात्मक रुप में देखा है। किन्तु धीरे–धीरे इस विकास क्रम में उसने उपभोक्ता बनकर प्राकृतिक संसाधनों को उपभोग की वस्तु मान कर उसका दोहन करना प्रारम्भ कर दिया। वर्तमान में स्थिति यह है कि वह आज प्रकृति का सबसे बड़ा प्रतिद्वन्द्वी बन गया है। औद्योगीकरण व विकास की होड़ के फलस्वरूप प्रकृति के अविवेकपूर्ण दोहन ने पर्यावरण असंतुलन जैसी ज्वलन्त समस्या को जन्म दिया है। अतः आज विश्वस्तर पर पर्यावरण संकट से उबरने की तीव्र आवश्यकता को अनुभव किया जा रहा है। क्योकि ''प्रकृति सुरक्षित तो जीवन संरक्षित''। अतः पर्यावरण को संतुलित बनाने की आवश्यकता है क्योंकि पर्यावरण ने ही समस्त सृष्टि को सदियों से बचाये रखा है और यदि हमने इसे नष्ट न होने दिया तो यह आगे भी हमें और हमारी सृष्टि को बचाये रखने में समर्थ रहेगा। भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों से पर्यावरण का गहरा सम्बन्ध है। यदि इस सम्बन्ध में गम्भीरता से ध्यान नहीं दिया गया तो संसार का वर्तमान तथा भविष्य नष्ट हो जायेगा जिसके लिये हम आने वाली पीढियों के समक्ष अक्षम्य अपराधी माने जायेंगे।

इन्ही समस्याओं को देख कर पिछले कुछ वर्षों में, परिस्थितिकी तन्त्र के सन्तुलन में मनुष्य ने स्वंय अपनी भूमिका का अनुभव करते हुए कुछ कदम उठाने प्रारम्भ किये हैं। आधुनिक मनुष्य, जो प्रकृति की व्यवस्था को असंतुलित करता रहा, अब स्वयं के अस्तित्व की रक्षा के लिये उसके प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित कर रहा है। पर्यावरण और व्यक्ति के सम्बन्ध को समझने के लिये पर्यावरण को समझना आवश्यक हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्वः–

मानव अपने जीवन यापन हेतु प्राकृतिक वातावरण पर आश्रित है और पर्यावरण उसके जीवन के हर पक्ष को प्रभावित करता है। पर्यावरण द्वारा वैश्विक स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के लिये एक गम्भीर खतरा प्रस्तुत कर रहा है।

पर्यावरण को अधिकांशतः एक तरफ तो मानवीय लापरवाही का दुष्प्रभाव माना जाता है तथा दूसरी तरफ इसको व्यक्तिगत या सामूहिक क्रियाओं का प्रभाव माना जाता है जिसमें आर्थिक लाभ को सर्वोच्च वरीयता दी जाती है। बड़े शहरों तथा ऊंची इमारातों के बढ़ते चलन तथा सड़कों की चौड़ाई तथा खुले पार्किंग स्थलों की अनदेखी से अधिक पर्यावरण का ह्यस हो रहा है। सही अर्थों एवं बुनियादी संरचनात्मक प्रगति की दौड़ में पर्यावरण को उचित महत्व नहीं दिया गया है। बल्कि कई बार पर्यावरण को दरकिनार करने से उसके ह्यस में वृद्धि हुई है। पर्यावरण संरक्षण राष्ट्रों के लिए सतत संकट का प्रश्न बन चुका है। जनसंख्या में लगातार वृद्धि, औद्योगीकरण के मशरूम विकास तथा शहरीकरण की अभूतपूर्व दर के कारण पर्यावरणीय दबावों की जाटिल वृद्धि ने किसी भी मूल्य पर आर्थिक प्रगति को तीव्र करने का दबाव हुआ है।

आज यह एक अपेक्षित शर्त बन गयी है कि प्रत्येक नागरिक में पर्यावरणीय नैतिकता को विकसित किया जाये जिससे पर्यावरण की तरफ प्रत्येक व्यक्ति संवेदनशील बने साथ ही साथ पर्यावरणीय दृष्टिकोण का भी विकास किया जाये जिससे वह पर्यावरण संरक्षण हेतु त्वरित कदम उठाने को अभिप्रेरित हो सके।

उद्देश्यः–

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड के निवासियों की पर्यावरण जागरूकता के स्तर का उनकी पर्यावरण अभिवृत्ति के प्रभाव को ज्ञात करना है। इस आशय के लिये वर्तमान अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हो।

1. उत्तराखण्ड राज्य की जनता के पर्यावरणीय जागरूकता का उनके पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर प्रभाव का आंकलन करना है।

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए जैसे ही समस्या के अस्तित्व की खोज की जाती है वैसे ही परिकल्पना का निर्माण होना चाहिए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप निम्नवत हैं।

1. उत्तराखण्ड राज्य के पुरुष तथा महिलाओं की पर्यावरण जागरूकता के स्तर का उनकी पर्यावरण अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमांकनः– प्रस्तुत शोध अध्ययन भौगोलिक रूप से उत्तराखण्ड राज्य के टिहरी, चमोली, देहरादून जिले के परिसीमा तक परिसीमित किया गया है। परिसीमन में उत्तराखण्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले 300 पुरुष तथा 300 महिलाओं को सम्मिलित किया गया है।

शोधविधिः

शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन के लिये विधिवत सम्पादन के लिये निम्न शोध विधि का चयन किया गया है।

1. सर्वेक्षणात्मक विधिः– अनुसंधान की वह विधि जिसके अन्तर्गत वर्तमान समय एवं स्थितियों में विद्यमान प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। सर्वेक्षण विधि कहलाती है। शैक्षिणिक अनुसंधान में इस विधि का प्रयोग किया गया है।

इस विधि में पूर्व निर्धारित प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली साक्षात्कार एवं अनुसूची द्वारा जाकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त जानकारी या प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात वर्गीकरण सारणीयन प्रदत्तों से प्राप्त जानकारी की व्याख्या एवं मूल्यांकन किया जाता है।

शोध उपकरणः–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थिनी ने अपने न्यायदर्श को वांछित आंकड़ों के चयन हेतु पर्यावरण जागरूकता के लिये यशोदरा एवं हसीन ताज को प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

पूर्व अध्ययन की समीक्षाः–

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों का ज्ञानकोशी पत्र–पत्रिकाओं शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है। इनमें मुख्य रूप से पठवा शुभु(1982)[2], श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य(1987), बनर्जी शुभकर (1996) ने पर्यावरण शोध से सम्बन्धित कार्य किये हैं।

परिणामों का विश्लेषण तथा व्याख्याः–

शोधार्थिनी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य जिसकी सहायता से शोध निष्कर्षों की वैद्यता तथा विश्वसनीयता का पता चलता है। जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविकता स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों की व्यवस्थित क्रम में सारणीवद्ध किया जाय।

परिकल्पना 1:–

उत्तराखण्ड राज्य के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

सारणी कमांक –1

उत्तराखण्ड राज्य के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

आरेख – 1

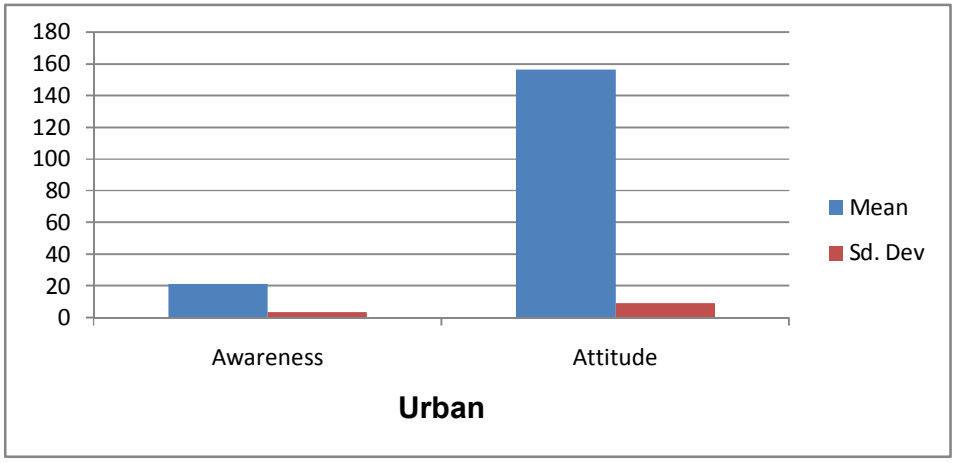

आरेख–2

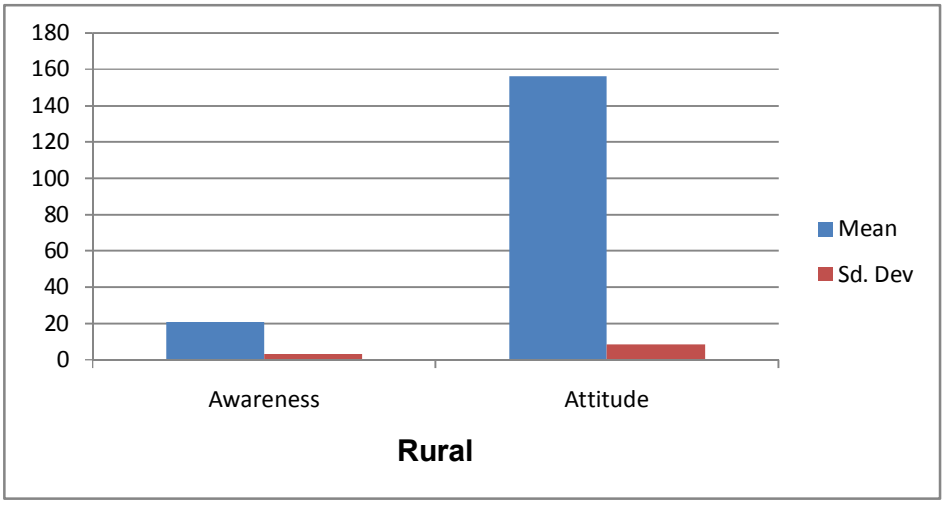

विषय वस्तु	न्यादर्श N	पर्या. जाग. औसतमान	पर्या. अभिवृत्ति औसतमान	पर्या. जाग.एवं पर्या. अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणाक (r)	परिणाम
शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले लोग।	300	22.15 (61%)	149.87 (52%)	r=+0.113	.05 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाते लोग।	300	22.20 (61.6%)	149.81 (51%)	r=+.113	

विश्लेषणः

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उत्तराखण्ड राज्य के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के निवासियों में पर्यावरणीय जागरूकता व पर्यावरणीय अभिवृत्ति औसतन क्रमशः 61 तथा 51 प्रतिशत से अधिक पायी गई है। इसके साथ ही ग्रामीण तथा शहरी व्यक्तियों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणाक .05 विश्वसनीयता स्तर पर सार्थक पाया गया जिससे यह कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड के 95 प्रतिशत शहरी तथा ग्रामीण व्यक्तियों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। तदैव परिकल्पना क्रमांक 5(ब) अस्वीकृत हो जाती है।

निष्कर्षः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के निवासियों के पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का पर्यावरण अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। पर्यावरण अभिवृत्ति के द्वारा हमारे उपभोग से परिणामों को समझने के लिए जिम्मेदारी को सन्दर्भित करता है और प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण और भविष्य की पीढी के लिये पृथ्वी की रक्षा करने के लिये हमारी व्यक्तिगत और सामाजिक जिम्मेदारी समझने से है। प्रकृति हमारे पूर्वजों का हमारे लिये उपहार नहीं है। वरन् हमें इसे अगली पीढ़ी को देना है। अतः यह आवश्यक है कि हमें पता होना चाहिए कि आने वाली पीढ़ी के लिये पर्यावरण की रक्षा कैसे की जाय।

इस शोध से यह पता चलता है कि पर्यावरण संरक्षण की प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी होनी चाहिए। पर्यावरण को बचाना एक सामाजिक दायित्व होना चाहिए। संसाधनों का सतत् उपयोग केवल पुस्तकों में वर्णित एवं वाक्यांश है। लेकिन लोगों के व्यवहार में यह देखने को नहीं मिलता। प्रत्येक व्यक्ति भविष्य की पीढी के बारे में यह सोचे बिना उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना चाहता है। जो कि पृथ्वी के संसाधनों में कमी का प्रमुख कारण है। पर्यावरण जागरूकता की कमी के कारण लोगों को पर्यावरण नैतिकता भी कम होती है। इस शोध से यह पता चला है कि पर्यावरण जागरूकता बढने के साथ–साथ पर्यावरण अभिवृत्ति का स्तर भी बढता है। पर्यावरण अभिवृत्ति व पर्यावरण जागरूकता में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। अतः हमें पर्यावरण अभिवृत्ति एवं पर्यावरण जागरूकता में वृद्धि के लिये लोगों को प्राकृतिक संसाधनों के न्यायपूर्ण उपभोग के प्रति सजग करना होगा।

सन्दर्भः–

1. पाठक, पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 2005, 2(08): 78–80
2. गुप्ता, एन. पी. तथा गुप्ता अल्का सांख्यिकीय विधिया इलाहाबाद शारादा पुस्तक भवन 2007
3. बनर्जी शुभंकर पर्यावरण की रक्षा के लिए जन आन्दोलन आवश्यक कुरुक्षेत्र, 1996, 14–17
4. पठवा शुभू पर्यावरण एवं संस्कृति, बीकानेर (भारत) वाग्देवी प्रकाशन, 1989, पृष्ठ 124